जुलाई 2023 वर्ष 2, अंक 6

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

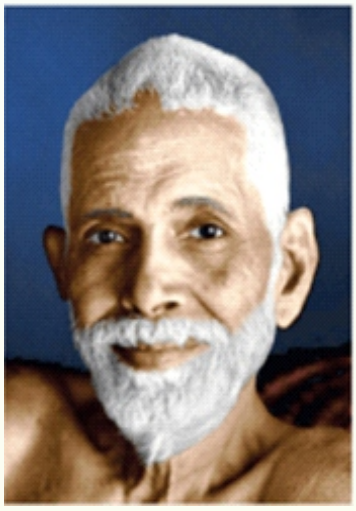

"ईश्वर, कृपा (**Grace**) और गुरु पर्यायवाची (**synonymous**), शाश्वत (**eternal**) और अंतर्निहित हैं... मेरे लिए, इनमें कोई भेद नहीं है। अनुग्रह (**Grace**) सदैव भरे हुए सागर की तरह प्रवाहित हो रहा है। हर कोई अपनी क्षमता (**capacity**) के अनुसार इससे लाभ उठाता है। जो व्यक्ति केवल एक गिलास लेकर आता है, वह यह शिकायत कैसे कर सकता है कि वह उतना नहीं ले जा पा रहा है, जितना कोई दूसरा व्यक्ति जो एक मर्तबान (**jar**) लेकर आया है?"

–रमण महर्षि

खंड

खंड क : डी.ई.आई.....

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा.....

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI).....

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई. में अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन डी. एस. सी.–एन. एस. सी. 2023 का आयोजन....3
2. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की जयंती का उत्सव....4
3. विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन....4
   संकाय समाचार....5
4. शिक्षा विभाग....5
   डी.ई.आई. ने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए....5
   संकाय समाचार....5
5. डी.ई.आई. टेक्निकल कॉलेज....6
   संकाय समाचार....6
6. डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय....6
   नए छात्र मंत्रिमंडल ने कार्यभार संभाला....6
   संकाय समाचार....6

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

7. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से....6
8. सूचना केन्द्रों से समाचार....8
   दयालबाग़ निर्माताओं की प्रदर्शनी–सह–बिक्री आई.सी.टी सेंटर, बैंगलोर में आयोजित की गई....8
   सूचना केंद्र–करोलबाग, नई दिल्ली द्वारा 'स्थिरता' (sustainability) से संबंधित अतिथि व्याख्यान आयोजित....8
   अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस डी.ई.आई. सूचना केंद्र, करोलबाग में मनाया गया....8
   करनूल सेंटर में टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग में इंटर्नशिप प्रशिक्षण आयोजित किया गया....8
   दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के नाबार्ड सेंटर का एक्सपोज़र विज़िट आयोजित किया गया....9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

9. संपादक की डेस्क से....10
10. अधिवृक्क ग्रंथि और उसके हार्मोन....10
11. उभरती अर्थव्यवस्था के लिए 21वीं सदी के कौशल....13
12. पूर्व छात्र बाइट्स....14
    प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड....14

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. समाचार

डी.ई.आई. में अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन डी. एस. सी.–एन. एस. सी. 2023 का आयोजन

राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग़, आगरा और दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा ने एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया – 5वां अंतर्राष्ट्रीय 'दयालबाग़ (कला) विज्ञान (और अभियांत्रिकी) (विकासवादी/पुनः–विकासवादी) चेतना (डी एस सी) 27–29 जून, 2023 को 46वें (इंटर) नेशनल सिस्टम्स कॉन्फ्रेंस (एन एस सी) के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किया गया । इस सम्मेलन का विषय था 'एवोल्यूशन ऑफ होमोसेपिएंस टू होमो स्प्रिचुअलिस फॉर–बैटर वर्ल्डलीनेस'।

सम्मेलन में दुनिया भर से प्रसिद्ध विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, समग्र वक्ताओं, प्रमुख वक्ताओं, प्रतिनिधियों, शोधकर्ताओं और छात्रों ने भाग लिया। इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर, शिक्षा सलाहकार समिति (डी.ई.आई. के लिए एक प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय) के अध्यक्ष श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी साहब द्वारा उद्घाटन 'विज़न–टॉक' दिया गया, जिसमें उन्होंने वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में शिक्षा का दयालबाग़ मॉडल जो प्रकृतिस्थ रूप में जटिल है की सफलता पर प्रकाश डाला। विज़न टॉक के बाद डॉ. अर्श धीर ने ''रोल ऑफ कम्युनिटीज़ इन अचीविंग सस्टेनेबल डेवलपमेंटः ए केस स्टडी'' शीर्षक से एक प्रस्तुति दी। उन्होंने दयालबाग़ और डी.ई.आई. मॉडल पर चर्चा करते हुए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण की त्रिमूर्ति (Trinity) पर जोर देते हुए मातृत्व से अनंत काल तक, स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण–निवास, महिला सशक्तिकरण, अंतिम, सबसे कम, सबसे निचले तबके तक पहुंचने की और सर्वहारा तक पहुँचने की समग्र स्थिरता की बात की ।

सम्मेलन की शुरुआत प्रोफेसर डॉ. आनंद श्रीवास्तव, समन्वयक आयोजक, डी एस सी, कील विश्वविद्यालय, जर्मनी के 'सम्मेलन सत्र के उद्घाटन भाषण' के साथ हुई। प्रो. (डॉ.) सरूप रानी माथुर, सह–अध्यक्ष (पश्चिम) डी एस सी, एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी, यू एस ए, प्रो. (डॉ) अपूर्व नारायण, सह–आयोजक डी एस सी, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ओंटारियो और यूनिवर्सिटी ऑफ वॉटरलू, कनाडा और प्रोफेसर (डॉ.) प्रेम कुमार कालरा, अध्यक्ष सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के समक्ष ''सिविलाइजेशन एंड कल्चरः द अडवेंट ऑफ Conscientiousness'' शीर्षक से अपने उद्घाटन भाषण में, प्रोफेसर (डॉ.) पी.के. कालरा, निदेशक, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), आगरा ने नैतिकता, सामाजिक संवेदनाओं पर विचारों के विकास को रेखांकित किया और मूल्य, कर्त्तव्यनिष्ठा के व्यक्तित्व गुणों पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि यह गुण संस्कृति और सभ्यता में कैसे योगदान करते हैं।

सम्मेलन के अन्य सत्रों के दौरान, कई अन्य प्रतिष्ठित और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित विशेषज्ञों, युवा शोधकर्ताओं ने पूर्वी और पश्चिमी दृष्टिकोण से संबंधित विषयों पर अपनी वार्ता या अपने शोध प्रस्तुत किए – आध्यात्मिक चेतना, तंत्रिका विज्ञान, सचेतन, आत्म–जागरूकता, ऊर्जा प्रणालियाँ, गूढ़ प्रणालियाँ, पर्यावरण प्रणालियाँ, परिवहन प्रणालियाँ, शिक्षा प्रणालियाँ, गणितीय प्रणालियाँ,सूचना और संचार प्रणालियाँ,जैविक प्रणालियाँ, स्वास्थ्य सेवा प्रणालियाँ, क्वांटम और नैनो प्रणालियाँ, कृषि और डेयरी प्रणालियाँ, चेतना आधारित प्रणालियाँ, स्मार्ट गाँव/शहर, साहित्यिक और सामाजिक प्रणालियाँ, मूल्य और गुणवत्ता आधारित प्रणालियाँ, सुपर–बुद्धिमान प्रणालियाँ आदि। अंत में एक संयुक्त पैनल चर्चा, एक आम सहमति निर्माण सत्र और एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे सम्मेलन बेहद उपयोगी निष्कर्ष पर पहुंचा ।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की जयंती का उत्सव

7 मई, 2023 को, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, ''द बार्ड ऑफ बंगाल'' का 162वां जन्मदिन संस्थान के 'अनुपम उपवन' परिसर में कला, सौंदर्य और रचनात्मकता केंद्र द्वारा मनाया गया। समारोह का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रेम कुमार कालरा ने किया, उन्होंने सभी की सफलता की कामना की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रोफेसर गोपालजी प्रधान ने ''रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन'' विषय पर बोलते हुए कहा कि टैगोर विश्व मानवता के अनन्य समर्थक थे। वे विश्वविद्यालयों की संरचना में सीमाओं या चारदीवारी जैसी संरचनाओं को निरर्थक और ज्ञान में बाधक मानते थे। इसीलिए उन्होंने विश्वभारती की संकल्पना की, जहां उन्होंने शिक्षा के एक ऐसे मंदिर का सपना देखा जो किसी भी दरवाजे या दीवार से रहित हो।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आनन्द कुमार, सिटी मजिस्ट्रेट, आगरा ने अपने सम्बोधन में कहा कि रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा नीति को अपनाकर ही हम शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। सेंटर फॉर आर्ट्स, ब्यूटी एंड क्रिएटिविटी के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रेमशंकर ने कार्यक्रम की रूपरेखा दर्शकों के सामने रखते हुए कहा कि गुरुदेव रवीन्द्र सामाजिक चेतना के निर्माण के लिए आध्यात्मिकता, शिक्षा और कलात्मकता को आवश्यक मानते थे।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'अनुपम उपवन' के सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में खुले आसमान के नीचे सूरज की ताजा किरणों के नीचे योग और ध्यान शिविर था। योग सत्र का संचालन श्रीमती संगीता सिन्हा ने किया। इसके बाद डी.ई.आई., प्रेम विद्यालय और आर.ई.आई. के विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने श्रमदान किया और यह संकल्प भी लिया कि वे प्रकृति के संरक्षण और बचाव के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। श्रमदान के बाद विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इन कार्यक्रमों में रवीन्द्र संगीत, लोक गायन, संगीत वाद्ययंत्र, ऑन–द–स्पॉट पेंटिंग, पोस्टर, नुक्कड़ नाटक, भाषण आदि शामिल थे। इन गतिविधियों में भाग लेने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया और उन्हें प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम की संयोजक डी.ई.आई. के कला संकाय के संगीत विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर लवली शर्मा थीं।

विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

21 जून, 2023 को संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के आयोजन के दौरान एन सी सी कैडेटों द्वारा मुख्य अतिथि श्री मयंक ज्योति, उप परिवहन आयुक्त, आगरा को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। मुख्य अतिथि ने कहा कि योग प्रत्येक व्यक्ति के शरीर और मन के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि योग करने के साथ–साथ इसे सही तरीके से करना भी जरूरी है। इसके बाद योग प्रशिक्षण सत्र हुआ, जिसमें योग गुरु श्रीमती संगीता सिन्हा एवं श्री अभिनव सिन्हा द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। सर्वश्रेष्ठ योगासन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार भी दिये गये, जिनमें डॉ. पारुल भटनागर, सुश्री कौशिकी वर्मा एवं श्री रामसेवक को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। करीब 200 लोगों ने एक साथ योगासन किया। कार्यक्रम के अंत में उन्नत भारत अभियान के क्षेत्रीय समन्वयक प्रोफेसर अक्षय कुमार सतसंगी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निशीथ गौड़ ने किया। इस अवसर पर संस्थान के रजिस्ट्रार प्रोफेसर आनंद मोहन,

अमर उजाला के महाप्रबंधक विशाल अरोड़ा, विभिन्न संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, एन एस एस अधिकारी डॉ. सुनेश्वर, डॉ. सनिल, डॉ. ईश्वर, डॉ. रजनीश इस अवसर पर उपस्थित लोगों में डॉ. भावना, डॉ. नमस्या और डॉ. नमिता भाटिया शामिल थीं।

संकाय समाचार

शिक्षा विभाग

डी.ई.आई. ने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए

शिक्षा और अनुसंधान में अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डी.ई.आई.) और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आगरा ने 26 मई, 2023 को एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता ज्ञापन संकाय, छात्रों, अकादमिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करेगा। इस विश्वास के साथ की दोनों स्तर पर अनुसंधान और शैक्षिक प्रक्रियाओं को बढ़ाया जाएगा और ऐसे आदान–प्रदान की स्थापना से संकाय और छात्रों के बीच आपसी समझ बढ़ेगी।

- 17–19 अप्रैल, 2023 को स्कूल ऑफ एजुकेशन डी.ई.आई., दयालबाग़, आगरा में पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन फॉर टीचर्स एंड टीचिंग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तहत शिक्षा संकाय द्वारा ''अनुसंधान में नवीन प्रथाओं'' पर पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मैकमास्टर यूनिवर्सिटी, कनाडा में रिसर्च एसोसिएट डॉ. निखिल शर्मा, अकाउंटेंसी और लॉ विभाग, डी.ई.आई. के प्रोफेसर प्रवीण सक्सेना, डी.ई.आई. के शिक्षा संकाय के रिसर्च स्कॉलर श्री निशांत, डीन, स्कूल ऑफ एजुकेशन, प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, और प्रोफेसर सी.बी. शर्मा, निदेशक, स्कूल ऑफ एजुकेशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थे। हाइब्रिड मोड में कार्यशाला में कुल 118 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का संचालन डॉ. प्रीति मनानी और डॉ. प्रीति शर्मा ने किया।
- स्कूल ऑफ एजुकेशन, डी.ई.आई. ने शिक्षा मंत्रालय के पी एम एम एन एम टी के तहत 19–20 मई, 2023 को 'कल्टीवेशन एंड कल्चरल प्राइड आर्ट एंड एजुकेशन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की। एन सी ई आर टी की प्रोफेसर ज्योत्सना तिवारी ने अपने मुख्य भाषण में एन ई पी 2020 के घटकों के बारे में बताया जो सांस्कृतिक गौरव, कला और शिक्षा के विकास पर जोर देता है। प्रो. अनश्वना सक्सैना, आगरा कॉलेज, आगरा ने 'ग्लोबल आस्पेक्ट्स ऑफ इंटीग्रेशन ऑफ आर्ट एंड कल्चर इन एजुकेशन' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रोफेसर तनुजा अग्रवाल, के.आर. पी जी कॉलेज, मथुरा ने 'कल्टीवेशन ऑफ इंडियन कल्चर एंड एजुकेशन' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। समापन सत्र में मुख्य वक्ता प्रोफेसर सीमा बंसल, टी.आर. पी जी कॉलेज, अलीगढ़ ने 'म्यूज़िक आर्ट एंड ब्यूटी इन एनसिएंट इंडिया', विषय पर अपना व्याख्यान दिया। विभिन्न सत्रों में देश–विदेश के 58 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। सम्मेलन का संचालन डॉ. मनु शर्मा और डॉ. कल्पना गुप्ता ने किया।
- स्कूल ऑफ एजुकेशन ने 25 –27 मई, 2023 तक 'टीचिंग ऑफ मेथमेटिक्स एंड साइंस थ्रू पप्पेट्री' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला की भी मेजबानी की। डॉ. मनु शर्मा ने सेवारत और पूर्व–सेवा शिक्षकों को छड़ी, छाया और दस्ताने बनाने का प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संकाय समाचारः

- 5 मई, 2023 को डॉ. सोना दीक्षित को पर्यटन और प्रबंधन विभाग, डॉ. बी आर अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा और प्रबंधन विभाग, हावर्ड विश्वविद्यालय, वाशिंगटन डी सी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'रिसर्च पेपर राइटिंग एंड टीचिंग पेडागॉजी' पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में विशिष्ट वक्ता के रूप में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने 9 मई, 2023 को यूनेस्को द्वारा आयोजित 'असेसिंग ओपन साइंस फोकस ऑन द ओपन एंगेजमेंट ऑफ सोसाइटल एक्टर्स एंड ओपन डायलॉग विद अदर नॉलेज सिस्टम्स' पर समूह चर्चा में एक विशेषज्ञ के रूप में काम किया। 24 मई, 2023 को टाइम्स हायर एजुकेशन (टी एच ई), लंदन द्वारा आयोजित शिक्षा उद्योग में डिजिटल परिवर्तन के वैश्विक सर्वेक्षण में 'इंपैक्ट ऑफ डिजिटाइजेशन ऑन द फ्यूचर ऑफ हायर एजुकेशन के प्रभाव' पर एक पैनल चर्चा में भाग लिया।
- डॉ. नेहा जैन और डॉ. नीतू सिंह ने 12 मई, 2023 को कौनास विश्वविद्यालय, लिथुआनिया द्वारा आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'एन एक्सप्लोरेट्री स्टडी ऑफ टेक्नो पेडागॉजिकल स्किल्स एंड हैप्पीनेस ऑफ प्रोस्पेक्टिव टीचर्स इन रिलेशन टू जेनरेटेड जेनरेटिव एआई' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डी.ई.आई. टेक्निकल कॉलेज

संकाय समाचारः

डी.ई.आई. टेक्निकल कॉलेज के श्री राम सिंह और डॉ. मुकेश गौतम को 2 मई, 2023 को 'हैंड्स ऑन इंजीनियरिंग ड्राइंग' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आई ओ सी एल) इकाई, मथुरा रिफाइनरी में रिसोर्स पर्सन के रूप में आमंत्रित किया गया था। बॉयलर ऑपरेशंस इंजीनियर (बी ओ ई) उम्मीदवारों के लिए आयोजन किया गया। पूरे भारत में आई ओ सीए ल की अन्य रिफाइनरी इकाइयों के बी ओ ई अभ्यर्थी भी ऑनलाइन मोड में प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए।

डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय

नए छात्र मंत्रिमंडल ने कार्यभार संभालाः 2 मई, 2023 को छात्रों के प्रतिनिधियों के चयन के लिए चुनाव हुए। इस प्रक्रिया में छात्रों ने बहुत उत्साह से भाग लिया और भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों को सीखा। प्रेम विद्यालय के केबिनेट सदस्य निम्नलिखित हैंः सुश्री छवि भंडारी– हेड गर्ल, सुश्री नेहा यादव– संयुक्त हेड गर्ल, सुश्री तमन्ना सतसंगी– अनुशासन प्रभारी और सुश्री धुन आधार – समाज सेवा प्रभारी।

संकाय समाचारः यू.पी. सरकार द्वारा 20 अप्रैल, 2023 को लखनऊ, यू.पी. में 'डॉग मैटर्स' पर एक सेमिनार आयोजित किया गया था। इस सेमिनार में बोलने के लिए डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय की ऑनरेरी शिक्षक डॉ. सुरत प्रसाद गुप्ता को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने बहुमूल्य विचार दिए जो जानवरों के प्रति दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते थे। वर्तमान में, वह पीपल फॉर एनिमल्स, आगरा (पी एफ ए आगरा) से जुड़ी हुई हैं। डॉ. सुरत प्रसाद की प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

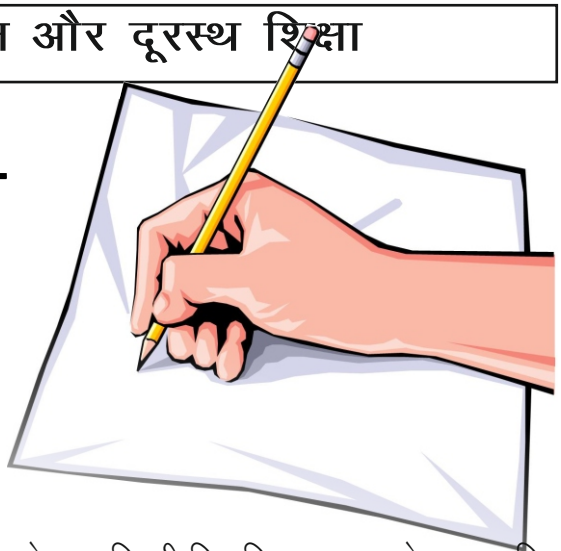

मेरा ध्यान भारत में उच्च शिक्षा से संबंधित निम्नलिखित दो हाल के अखबारों की सुर्खियों की ओर आकर्षित हुआः

(i) पहला शीर्षक 19 मई, 2023 के द टाइम्स ऑफ इंडिया में छपा था जिसमें कहा गया कि 'शीर्ष 64 में से 29 भारतीय विश्वविद्यालय वर्ष की वैश्विक रैंकिंग में फिसले'। इनमें शामिल आई.आई.एस.सी (IISc), बेंगलुरु रैंक 491 से गिर कर रैंक 494 पर पहुँचा, आई.आई.टी, मद्रास 559 से 570; टी.आई.एफ.आर 563 से 580, दिल्ली विश्वविद्यालय 591 से 621, आदि। यह अध्ययन सैंटर फॉर–वर्ल्ड युनिवर्सिटी रैकिंग द्वारा 20,531 विश्वविद्यालयों में विश्वस्तर पर चार कारकों के आधार पर किया गया था,

अर्थात शिक्षा की गुणवत्ता (25%), रोजगार योग्यता (25%), संकाय की गुणवत्ता (10%), और अनुसंधान प्रदर्शन (research performance) (40%)। कथित तौर पर रैंकिंग में गिरावट के मुख्य कारण इन विश्वविद्यालयों के अनुसंधान प्रदर्शन में गिरावट और अपर्याप्त फंडिंग को बताया गया है।

(ii) 5 जुलाई, 2023 के 'द इंडियन एक्सप्रेस' में अमिताभ सिन्हा का एक लेख प्रकाशित हुआ, जो 'विज्ञान अनुसंधान की दशा (state) से संबंधित है। इस लेख में कहा गया है कि जबकि भारत के पास विज्ञान और इंजीनियरिंग के छात्रों का एक बड़ा पूल (pool) है और वे वैश्विक स्तर पर अग्रणी अनुसंधान क्षेत्रों में शामिल हैं लेकिन कई प्रमुख मापदंडों पर खराब प्रदर्शन जैसे (क) अनुसंधान और अनुसंधान पर व्यय; विकास, जो 2011–12 में सकल घरेलू उत्पाद के 0.76% से 2020–21 में 0.64% तक लगातार गिरावट देखी गई है, जबकि यह इजराइल में 5.35%, दक्षिण कोरिया में 4.89%, स्वीडन, बेल्जियम, अमेरिका, जापान में 3% से अधिक है। ऑस्ट्रिया, और जर्मनी और फिनलैंड में 2.91% और (ख) प्रति मिलियन जनसंख्या पर शोधकर्ता जो भारत में 262 है जबकि इजराइल में 8342, अमेरिका में 4821, यू.के. में 4684, चीन में 1585 और ब्राजील में 888, आदि।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करने के लिए एक नए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउन्डेशन (National Research Foundation) की स्थापना की सिफारिश की गई है। एन.ई.पी. 2020 लॉन्च होने के 3 साल बाद हाल ही में इस प्रस्ताव को सरकार की मंजूरी दी गई।

अमिताभ सिन्हा ने 'स्टेट ऑफ साइंस रिसर्च' पर अपने लेख में कहा: भारत में लगभग 40,000 उच्च शिक्षा संस्थान हैं, इनमें अधिकतर कॉलेज हैं इनमें से 1,200 से अधिक पूर्ण विकसित विश्वविद्यालय हैं। एन.आर.एफ. पर परियोजना रिपोर्ट के विस्तृत विवरण के अनुसार, इनमें से केवल एक प्रतिशत ही सक्रिय अनुसंधान में संलग्न हैं। अन्य देशों के लिए तुलनात्मक संख्या उपलब्ध नहीं है, लेकिन सामान्य ज्ञान है कि अधिकांश अग्रणी देशों में, विश्वविद्यालय अनुसंधान के केंद्र हैं और विकास गतिविधियों में संलग्न है।
भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रोफेसर अरिंदम घोष ने कहा, ''अगर मुझसे केवल एक ही क्षेत्र बताने को कहा जाए जिसमें मैं एन आर एफ को बदलाव लाते देखना चाहूंगा, यह यहीं होगा – और वह होगा शिक्षा (coupling education) को अनुसंधान के साथ जोड़ना। यह सबसे बड़ी विसंगति है जो भारतीय प्रणाली में मौजूद है और यह टिकाऊ नहीं है। इसलिए, एन.आर.एफ. अवधारणा इसे सुधारने पर बहुत अधिक जोर देती है।''

यह प्रतिस्पर्धा का युग है और आज के परिदृश्य में किसी उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा उच्च रैंक प्राप्त करना कोई विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता है। अधिकांश रैंकिंग प्रक्रियाएँ अनुसंधान को उच्च महत्व देती हैं और अब यह स्वीकार किया जाता है कि अच्छे शोध के परिणामस्वरूप कई लाभ होते हैं जैसे यह शिक्षण में सुधार करता है, उच्च गुणवत्ता वाले संकाय और छात्रों को आकर्षित करता है, आदि। अच्छी गुणवत्ता वाला शोध जिसके परिणामस्वरूप उच्च–प्रभाव कारक पत्रिकाओं में उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशन एक आवश्यकता है जिनको नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

यह बेहद आश्चर्य की बात है कि अंग्रेजी अध्ययन विभाग में (i-c-n-c-) TALL का निरंतर सार्थक योगदान, न केवल अत्यधिक मान्यता प्राप्त और रेफरीड (refereed) प्रभावकारक पत्रिकाओं में, बल्कि इसके प्रकाशन की सार्थक मान्यता से भी सम्मानित किया गया; बल्कि कई पेटेंट के अनुदान में भी, जो निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग (मान लीजिए 20 वर्ष या उससे अधिक के लिए) में भारत गणराज्य द्वारा विधिवत मान्यता प्राप्त है, लगभग महत्वहीन और अप्रासंगिक स्थिति में पहुंचा दिया गया है (संबंधित उच्च न्यायालय और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों के तहत बढ़ी हुई दरों के संबंध में पूर्वव्यापी प्रभाव से जुर्माना वृद्धि और दंडात्मक दंड लगाने के विषय पर, एक बार फिर एन सी डी आर सी द्वारा पूर्वव्यापी प्रभाव से, सी बी आई जांच और भारत गणराज्य के सर्वोच्च न्यायालय की दो–न्यायाधीशों / तीन–न्यायाधीशों की पीठ के अनुसार (अपने ओ एस डी के माध्यम से))!

सूचना केंद्रों से समाचार

दयालबाग निर्माताओं की प्रदर्शनी–सह–बिक्री आई.सी.टी सेंटर, बैंगलोर में आयोजित की गई

बैंगलोर सेंटर ने 3 जून, 2023 को तेजपुंज आवासीय परिसर के प्रदर्शनी हॉल में संकाय सदस्यों की देखरेख में DEI छात्रों द्वारा बनाए गए विभिन्न उत्पादों की 'प्रदर्शनी–सह–बिक्री' का आयोजन किया। स्टालों पर उद्देश्यों (objectives) को दर्शाने वाले पोस्टर और पैम्फलेट प्रदर्शित किए गए और केंद्र के साथ–साथ डी.ई.आई. मुख्य परिसर में चलाए गए विभिन्न कार्यक्रमों ने आगंतुकों का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने देश भर में समाज के सभी वर्गों को किफायती लागत पर ''मूल्य आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा'' प्रदान करने के केंद्र के प्रयासों की सराहना की। यह आयोजन एक बड़ी सफलता थी।

सूचना केंद्र–करोलबाग, नई दिल्ली द्वारा 'स्थिरता' (Sustainability) से संबंधित अतिथि व्याख्यान आयोजित

करोलबाग सेंटर के प्रबंधन छात्रों को सतत् ग्रोथ (growth) और विकास पर जानकारीपूर्ण और प्रेरणादायक आमंत्रित व्याख्यान दिए गए। विषयों में श्रीमती सिमी ग्रोवर द्वारा 'बाजरा का महत्व' शामिल था, जिसमें भोजन में बाजरा शामिल करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया, और इसके लाभ जैसे उच्च पोषण मूल्य, फाइबर से भरपूर, ग्लूटेन–मुक्त और कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स, बेहतर पाचन, रक्त शर्करा नियंत्रण और समग्र स्वस्थ स्वास्थ्य को बढ़ावा देना थे। दूसरा व्याख्यान श्री सौरभ कुमार द्वारा इस विषय पर दिया गया कि भारत को महाशक्ति बनने के लिए क्या करने की आवश्यकता है? वैश्विक महाशक्ति बनने के लिए आर्थिक विकास, बुनियादी ढांचे का विकास, शिक्षा और नवाचार पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह भी सलाह दी गई कि छात्र अपनी रुचि का करियर अपनाएं ताकि वे देश के विकास में योगदान दे सकें।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस डी.ई.आई. सूचना केंद्र, करोलबाग में मनाया गया

21 जून, 2023 को नई दिल्ली के DEI करोलबाग सेंटर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। महत्वपूर्ण योग आसन और ध्यान का एक सत्र आयोजित किया गया। उपस्थित सदस्यों को एक साथ योग आसन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। उन्हें नियमित रूप से योग करने के लाभों और महत्व से अवगत कराया गया, जैसे शारीरिक शक्ति में सुधार, संतुलन, लचीलापन, मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना आदि।

करनूल सेंटर में टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग में इंटर्नशिप प्रशिक्षण आयोजित किया गया

DEI सूचना केंद्र करनूल ने KVR गर्वमेंट कॉलेज फॉर विमेन के छात्रों को TD&P पाठ्यक्रम में 3 महीने का इंटर्नशिप प्रशिक्षण प्रदान किया। इस इंटर्नशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में कॉलेज के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए थे। 27 जून, 2023 को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम सप्ताह में, केंद्र ने के वी आर जी सी डब्ल्यू (ए) में इन छात्रों द्वारा डिज़ाइन और बनाए गए उत्पादों की एक प्रदर्शनी सह बिक्री का आयोजन किया, जो शहर के केंद्र में स्थित है। मुख्य अतिथि प्रोफेसर डी.वी.आर. साई गोपाल गारू, कुलपति, क्लस्टर यूनिवर्सिटी, कुरनूल ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। समारोह में क्लस्टर यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार प्रोफेसर डी. श्री निवासुलु गारू, के वी आर जी सी डब्ल्यू (ए) की प्रिंसिपल डॉ. एम. इंदिरा शांति, क्लस्टर यूनिवर्सिटी में गृह विज्ञान विभाग की एच ओ डी डॉ. आरती चक्र, और डी डी टी, टी डी एंड पी और ओ ए एंड सी ओ के सभी सलाहकार और सुविधाकर्ता, केंद्र के अन्य कर्मचारी और छात्र उपस्थित थे।

कुलपति ने इंटर्नशिप छात्रों को संबोधित किया और सेल में प्रदर्शित उत्पादों की कारीगरी की प्रशंसा की। उन्होंने केंद्र के प्रशिक्षकों की सराहना की। छात्रों द्वारा बनाए गए उत्पादों की सेल (बिक्री) हुई जैसे कि कॉटन ब्लॉक प्रिंटेड टॉप, चुन्नी, स्क्रीन प्रिंटेड टॉप और टी–शर्ट, स्कार्फ, प्रिंटेड टेबल क्लॉथ, टाई एंड डाई कॉटन साड़ियाँ, dyed और प्रिंटेड साड़ियाँ, जिनकी कुल कीमत 30,000 रुपये थी। के वी आर जी सी डब्ल्यू (ए) के प्रधानाचार्य ने उत्कृष्ट प्रशिक्षण देने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया और प्रशिक्षकों की सराहना की। यह खबर स्थानीय अखबारों में खूब छपी थी।

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के नाबार्ड सेंटर का एक्सपोज़र विज़िट आयोजित किया गया

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डी.ई.आई.) दयालबाग़ के आसपास के गांवों की महिलाओं के लिए आजीविका और उद्यमिता विकास कार्यक्रमों को प्रायोजित करने के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के साथ बड़े पैमाने पर काम कर रहा है। हाल ही में, एक एक्सपोज़र विज़िट का आयोजन किया गया था जिसमें डी डी एम लखीमपुर श्री प्रसून सोना, बंदना सिंह, अध्यक्ष, मुहम्मदी, ब्लॉक लखीमपुर खेड़ी और नाबार्ड के अन्य अधिकारियों ने 40 एस एच जी महिलाओं के साथ 8 जुलाई, 2023 को डी.ई.आई. परिसर और 9 जुलाई, 2023 को बैकुंठ धाम में डी.ई.आई. एन एस एस मेडिकल कैंप का दौरा किया। एक्सपोज़र विज़िट का मुख्य उद्देश्य डी.ई.आई. के कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण और ऊष्मायन केंद्र को दिखाना और लाभार्थियों के बारे में बताना था जो DEI स्किल सेंटर में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी आजीविका अर्जित कर आत्मनिर्भर बन रहे हैं।

इस एक्सपोज़र विज़िट के अंतर्गत तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम संकाय के डॉ. सचिन सक्सेना और डॉ. योगिता जैन ने हस्तनिर्मित कागज बनाने की प्रक्रिया और इसके विभिन्न अनुप्रयोगों पर प्रशिक्षण दिया। गृह विज्ञान विभाग की शोध छात्रा कुमारी पूजा ने जरदोज़ी कला के बारे में बताया कि यह कैसे की जाती है, इसमें कौन सी सामग्री का उपयोग किया जाता है, अड्डा कैसे लगाया जाता है, और जरदोज़ी के विभिन्न डिज़ाइन भी दिखाए। महिलाओं ने जरदोज़ी सीखने के विभिन्न लाभों की खोज की कि जरदोज़ी करके परिवार की आजीविका को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। आई.के. के ''हस्तशिल्प तकनीकी प्रशिक्षण सह इनक्यूबेशन सेंटर'' की प्रशिक्षक श्रीमती शिखा चोपड़ा ने उन्हें प्रबंधन, लागत, डिज़ाइनिंग, उत्पाद विकास और गुणवत्ता नियंत्रण सहित ब्लॉक प्रिंटिंग में कुशल बनने की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से समझाया। एक वीडियो दिखाया गया, जिसमें बाइंडर और कलर बनाने से लेकर प्रिंटिंग और पैकेजिंग तक की प्रक्रिया को विस्तार से बताया गया।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

जैसा कि उत्तरी भारत के कुछ हिस्से जलमग्न हैं, जो हमारी नदियों की प्रचंड बलशाली एवं वेगवती जलधाराओं में प्रकट होता है, यह प्रकृति का प्रकोप है, एक अशुभ संकेत है कि जब हम प्रकृति के साथ युद्ध छेड़ते हैं, तो हमें हारना होगा। नदियों में बाढ़, भूस्खलन और टूटे पुलों के कारण सैकड़ों यात्री फंसे हुए हैं। कई राज्यों ने विशेष रूप से झरना सिलों पर पर्यटकों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। उजाड़ने और लूटने की स्वार्थी आवश्यकता के आगे झुकने के बजाय, संरक्षण और रक्षा करने की तत्काल आवश्यकता है। शायद तब हम अन्य प्रजातियों के साथ जिन्हें इस संसार को हमारे साथ साझा करने का समान अधिकार है,प्राकृतिक परिवेश में सहयोग और सद्भाव से रह सकेंगे । इस अंक में 'पूर्व छात्रों की बाइट्स', डीईआई में प्रदान की जाने वाली बहुमुखी शिक्षा और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अमूल्य जीवन कौशल पर प्रकाश डालती हैं।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे छात्र उत्कृष्टता प्राप्त करें, तो हमें उन्हें ऐसे कौशल से युक्त करना होगा जो उन्हें हर तरह से आत्मनिर्भर और सक्षम बनाए। चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान स्वस्थ रहने के तरीकों पर नई रोशनी डालता रहता है। दयालबाग में हेल्थ केयर हैबिटेट उन लोगों को एक स्वस्थ जीवन शैली प्रदान करता है जो इससे संबंधित हैं; उन्हें शारीरिक और मानसिक शक्ति प्रदान करना; और अधिक महत्वपूर्ण रूप से आंतरिक संतुष्टि और आध्यात्मिक आनंद (हमेशा और हमेशा के लिए)।

अधिवृक्क ग्रंथि और उसके हार्मोन

डॉ. आनंद स्वरूप गुप्ता
एम.एस, एफ.ए.एम.एस, एफ.एसी.एस., एफ.आई.सी.एस., एफ.आई.ए.पी (यू.एस.ए)
वरिष्ठ सलाहकार सर्जन (सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोल०जी)
सर्जरी विभाग के पूर्व प्रो. एवं विभागाध्यक्ष प्रो
आरएनटी (रवींद्र नाथ टैगोर) मेडिकल क०लेज, उदयपुर (राजस्थान), भारत
आजीवन सदस्य, डी/648-2100

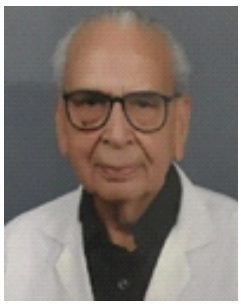

ड०. नंदिता श्रीवास्तव
एम.एस सी (भौतिकी), पीएचडी (सौर भौतिकी)
वरिष्ठ प्रोफेसर
उदयपुर सौर वेधशाला, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला

उदयपुर (राजस्थान), भारत

डॉ० जयमीन गुप्ता
एम.बी.बी.एस., एम.एस. जनरल सर्जरी
मुंबई (महाराष्ट्र), भारत

इस लेख में, अधिवृक्क ग्रंथि के शरीर विज्ञान और शरीर रचना विज्ञान को इसके नैदानिक महत्व पर जोर देते हुए संक्षेप में वर्णित किया गया है। हमें उम्मीद है कि बायोमेडिकल विषय पर निम्नलिखित लेख उन पाठकों के लिए भी उपयोगी साबित होगा जो चिकित्सा शब्दावली से अच्छी तरह परिचित नहीं हैं।

मानव शरीर में दो प्रमुख नियंत्रण तंत्र हैं:–

- तंत्रिका तंत्र
- अंतःस्रावी तंत्र

तंत्रिका तंत्र अन्य प्रणालियों के साथ तेजी से नियंत्रण और संचार कर सकता है; जबकि अंतःस्रावी तंत्र रासायनिक एजेंटों अर्थात् अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित हार्मोन की मदद से संचार करता है और बिना किसी वाहिनी के सीधे रक्त तक पहुंचता है, इसलिए इसे नलिका रहित ग्रंथियां भी कहा जाता है। यह बहुत धीमी प्रणाली है; हालाँकि, इसका प्रभाव अधिक लंबे समय तक चलने वाला और निरंतर हो सकता है। महत्वपूर्ण एवं प्रमुख अंतःस्रावी में से एक शरीर की ग्रंथियाँ, अधिवृक्क/सुप्रारेनल ग्रंथि है। ये दोनों गुर्दे के ऊपरी ध्रुव पर स्थित होते हैं और इसलिए इन्हें सुपररेनल कहा जाता है। दाहिनी ग्रंथि आकार में पिरामिडनुमा है और बाईं ओर अर्धचंद्राकार है। ग्रंथि के बाहरी भाग को कॉर्टेक्स कहा जाता है जो ग्रंथि का मुख्य द्रव्यमान बनाता है। ग्रंथि के आंतरिक भाग को मेडुला कहा जाता है जो ग्रंथि का केवल 1/10 भाग बनाता है और यह एड्रेनालाईन और नॉरएड्रेनालाईन स्रावित करता है।

दोनों भाग संरचनात्मक, कार्यात्मक और विकासात्मक रूप से एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। दोनों अधिवृक्क ग्रंथियों का वजन लगभग 4 ग्राम होता है।

अधिवृक्क प्रांतस्था कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स नामक हार्मोन के एक पूरी तरह से अलग समूह को स्रावित करती है। एक वयस्क में अधिवृक्क प्रांतस्था में तीन अलग–अलग क्षेत्र होते हैं:–

- जोना ग्लोमेरुलोसा – मुख्य रूप से मिनलकोकॉर्टिकॉइड का स्राव करता है
- जोना फासीकुलता – मुख्य रूप से ग्लुकोकोर्तिकोइद का स्राव करता है
- जोना रेटिकुलरिस – मुख्य रूप से सेक्स स्टेरॉयड

एड्रेनोकोर्टिकल हार्मोन कोलेस्ट्रॉल से प्राप्त स्टेरॉयड हैं। ग्लूकोकार्टिकोइड्स और मिनरलोकॉर्टिकोइड्स मानव शरीर का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। एक एड्रेनालेक्टोमाइज्ड जानवर लंबे समय तक उपवास और तनाव से बच नहीं सकता है और हाइपोग्लाइकेमिया और अपर्याप्त एडेनोसिन ट्राइफॉस्फेट (ए टी पी), ऊर्जा अणु उत्पादन के कारण मर जाता है, जो कोशिका झिल्ली के माध्यम से तरल पदार्थ और इलेक्ट्रोलाइट्स के पारित होने को प्रभावित करता है। अधिवृक्क अपर्याप्तता में तंत्रिका तंत्र में परिवर्तन में व्यक्तित्व परिवर्तन, चिड़चिड़ापन, आशंका और ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता शामिल है। आघात, संक्रमण, तीव्र गर्मी या सर्दी, सर्जरी और किसी भी दुर्बल करने वाली बीमारी जैसी तनावपूर्ण स्थितियों में कॉर्टिकल स्राव अक्सर बहुत बढ़ जाता है।

अधिवृक्क मेडूला

यह क्रोमैफिन कोशिकाओं से बना है और इन कोशिकाओं के बीच में स्वायत्त तंत्रिका गैन्लिया हैं। क्रोमैफिन कोशिकाएँ एड्रेनालाईन और नॉरएड्रेनालाईन का स्राव करती हैं। कोशिकाओं को क्रोमफिन्स कहा जाता है क्योंकि उनमें क्रोमियम के दागों के प्रति आकर्षण होता है। एड्रेनालाईन और नॉरएड्रेनालाईन को कैटेकोलामाइन कहा जाता है और ''लड़ो या उड़ो'' प्रतिक्रिया में मदद करते हैं और हाइपोग्लाइसेमिक आपात स्थिति में शरीर की चयापचय आवश्यकताओं को पूरा करने में भी सहायता करते हैं।

मेडुलरी हार्मोन

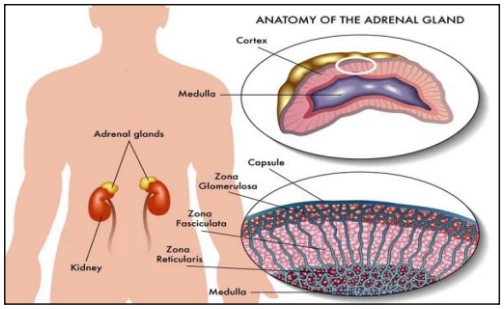

अधिवृक्क मज्जा मुख्यतः स्रावित करती है:–

1. एपिनेफ्रिन (एड्रेनालाईन) – प्रमुख स्राव
2. नॉर–एड्रेनालाईन – (नोर–एड्रेनालाईन)
3. डोपामाइन–डोपामाइन स्रावित करने वाली कोशिकाओं के प्रकार ज्ञात नहीं हैं और ये संख्या में बहुत कम हैं।

रक्त में एपिनेफ्रिन और नोरेपेनेफ्रिन दोनों से सहानुभूतिपूर्ण सक्रियता का स्तर बढ़ जाता है।

फीयोक्रोमोसाइटोमा

यह अधिवृक्क मज्जा का एक ट्यूमर है जो क्रोमैफिन कोशिकाओं के आकार और संख्या में वृद्धि (हाइपरप्लासिया) के कारण होता है जो एड्रेनालाईन और नॉर–एड्रेनालाईन के अत्यधिक स्राव का कारण बनता है जिससे निरंतर उच्च रक्तचाप, हाइपरग्लेसेमिया, भूख न लगना, शरीर की हानि जैसी विशेषताएं होती हैं। वजन, क्षिप्रहृदयता, धड़कन, गंभीर सिरदर्द, व्यापक चिंता और पसीना।

निदान : – रक्त, मूत्र औरध्या लार में कैटेकोलामाइन की बढ़ी हुई सांद्रता का पता लगाना।
इलाज :– सर्जरी

डोपामाइन के प्रभाव :–

1. यह डायस्टोलिक रक्तचाप में कोई बदलाव किए बिना सिस्टोलिक रक्तचाप बढ़ाता है। 2. डोपामाइन का उपयोग अक्सर गंभीर रूप से बीमार रोगियों में गहन देखभाल इकाई (आई सी यू) सेटिंग्स में किया जाता है।

अधिवृक्क ग्रंथि का नैदानिक महत्व

1. कोर्टिसोल स्राव की कमी से एडिसन रोग (निम्न रक्तचाप, मांसपेशियों में कमजोरी, एनीमिया, त्वचा का रंजकता) होता है।
2. अत्यधिक कोर्टिसोल स्राव के परिणामस्वरूप कुशिंग सिंड्रोम (मोटापा, मधुमेह मेलेटस, अतिरोमता और हाइपोगोनाडिज्म) होता है।
3. अत्यधिक एण्ड्रोजन के कारण हो सकते हैं:–

   (i) महिलाओं में मर्दानाकरण (पौरुषीकरण)।
   (ii) पुरुषों में स्त्रीकरण और स्तन वृद्धि (अत्यधिक एण्ड्रोजन के एस्ट्रोजन में परिवर्तित होने के कारण)।

4. स्तन कैंसर के कुछ उन्नत चरणों में अधिवृक्क ग्रंथियों का द्विपक्षीय शल्य चिकित्सा निष्कासन किया जाता है।
5. अधिवृक्क मज्जा (फियोक्रोमोसाइटोमा) के बिनाइन ट्यूमर का वर्णन ऊपर किया गया है।
6. अधिवृक्क ग्रंथियों को सीटी और एमआरआई द्वारा रेडियोलॉजिकल रूप से देखा जा सकता है।

7. नैदानिक निदान इतिहास, जैव रासायनिक परीक्षण और रेडियोलॉजिकल जांच द्वारा किया जाता है।

8- ACTH स्राव में दैनिक (सर्कैडियन) लय।

मनुष्यों में ये हार्मोन पूरे दिन लगातार स्रावित नहीं होते हैं। ACTH पूरे दिन अनियमित विस्फोटों में स्रावित होता है और प्लाज्मा–कोर्टिसोल इन विस्फोटों की प्रतिक्रिया में बढ़ता और घटता रहता है। मनुष्यों में विस्फोट सुबह के समय अधिक होते हैं और कोर्टिसोल का लगभग 75: दैनिक उत्पादन सुबह 4 बजे से 10 बजे के बीच होता है। शाम के समय विस्फोट सबसे कम होते हैं।

ACTH स्राव में यह दैनिक सर्कैडियन लय ग्लूकोकार्टोइकोड्स की निरंतर खुराक प्राप्त करने वाले अधिवृक्क अपर्याप्तता वाले रोगियों में मौजूद है। यह सुबह उठने के तनाव के कारण नहीं है, बल्कि दर्दनाक हो सकता है क्योंकि जागने से पहले ACTH स्राव में वृद्धि होती है। यदि ''दिन'' को प्रयोगात्मक रूप से 24 घंटों से अधिक तक बढ़ाया जाता है, अर्थात, यदि व्यक्ति को अलग–थलग कर दिया जाता है और दिन की गतिविधियाँ 24 घंटों से अधिक में फैली हुई हैं, तो वास्तविक चक्र भी लंबा हो जाता है, लेकिन ACTH स्राव में वृद्धि अभी भी होती है नींद की अवधि. दैनिक एसीटीएच लय के लिए जिम्मेदार जैविक घड़ी हॉपोथैलेमस में स्थित है (जेनॉन्स रिव्यू ऑफ मेडिकल फिजियोलॉजी, संदर्भ संख्या 5)। गंभीर तनाव के दौरान, स्रावित ACTH की मात्रा अधिकतम ग्लुकोकोर्तिकोइद्स आउटपुट उत्पन्न करने के लिए आवश्यक मात्रा से अधिक हो जाती है।

जेनॉन्ग द्वारा उपरोक्त समीक्षा सत्संग समुदाय के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हमें सत्संग/ध्यान/फील्ड कार्य आदि के लिए सुबह जल्दी उठना होता है, जहां सुबह के समय एसीटीएच विस्फोट अधिक होते हैं। इसलिए, दैनिक/सर्कैडियन लय दिन के विभिन्न घंटों में अध्ययन किया जाने वाला विषय है।

संदर्भ:–

पाल, जी.के. (2022), मेडिकल फिजियोलॉजी की पाठ्यपुस्तक (चौथा संस्करण)। एल्सेवियर।

शानबाग, टी.वी. और शेनॉय, ए.स. (2015), फार्माकोलॉजी. (तीसरा संस्करण) एल्सेवियर हेल्थ साइंसेज। चौरसिया, बी.डी. (2019)।
ह्यूमन एनाटॉमी, खंड II (8वां संस्करण)। सी.बी.एस. प्रकाशक एवं वितरक।
हॉल, जे.ई. (2015), मेडिकल फिजियोलॉजी की गाइटन और हॉल पाठ्यपुस्तक (13वां संस्करण)। डब्ल्यू.बी सॉन्डर्स।
बैरेट, के. (2012), गनॉन्स रिव्यू ऑफ मेडिकल फिजियोलॉजी (24वां संस्करण)। मैकग्रा हिल मेडिकल।

उभरती अर्थव्यवस्था के लिए 21वीं सदी के कौशल

अनुभूति ठाकुर, बी.एस.सी. इलेक्ट्रॉनिक्स, एम.सी.एम.

बैच (2012–13) धर्मशास्त्र में पी जी डिप्लोमा, डी.ई.आई.
वर्तमान में, ट्रांसियम कंसल्टिंग में मैनेजिंग पार्टनर

21वीं सदी तकनीकी क्षेत्र में लगातार बदलती प्रगति और हर क्षेत्र में तेजी से डिजिटलीकरण द्वारा विशिष्ट रूप से चिन्हित है। वैश्विकरण उभरती अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा दे रहा है, विशेष रूप से सेवा क्षेत्रों और ज्ञान आधारित उद्योगों में, इसके अतिरिक्त, पर्यावरण जागरूकता और इसके मुद्दों ने स्थायी प्रथाओं की आवश्यकता को जन्म दिया है। 21वीं सदी में सफल होने के लिए आज के किशोरों और युवाओं की परिवर्तनकारी पीढ़ी को कौशल, ज्ञान और सही दृष्टिकोण से लैस करने की आवश्यकता उभर कर सामने आती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश के युवाओं के बीच इन कौशलों के सेटों की सुविधा के लिए नीति और शासन पारिस्थितिकी तंत्र की दिशा में महत्वपूर्ण छलांग लगाते हुए 21वीं सदी के कौशल की मूलभूत आवश्यकता पर जोर देती है। तो, फिर 21वीं सदी के कौशल का गठन क्या है? विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यू ई एफ) ने अपने डब्ल्यू ई एफ फ्रेमवर्क में 21वीं सदी के लिए दक्षताओं का एक सेट सुझाया है। ये कुछ कौशल हैं जो आज के युवाओं को तेजी से विकसित हो रही दुनिया में जीवित रहने और आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल से लैस कर सकते हैं। फ्रेमवर्क में अनिवार्य रूप से तीन घटक होते हैं।

1. मूलभूत साक्षरताः यह दर्शाता है कि युवा रोजमर्रा के कार्यों में मुख्य कौशल कैसे लागू कर सकते हैं। इनमें साक्षरता, संख्यात्मकता, वैज्ञानिक साक्षरता, वित्तीय साक्षरता और नागरिक साक्षरता शामिल हैं।

2. चरित्र गुणः ये बताते हैं कि युवा अपने बदलते परिवेश को किस प्रकार अपनाते हैं। ये गुण हैं जिज्ञासा, पहल, दृढ़ता, अनुकूलनशीलता, नेतृत्व और सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता।

3. योग्यताएँः ये बताती हैं कि छात्र जटिल चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं। इसमें आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और संचार के 4सी शामिल हैं।

उपरोक्त कौशल सेट किसी भी तरह से संपूर्ण नहीं हैं। उद्यमिता, नवाचार, वैश्विक जागरूकता, नैतिक जिम्मेदारी, संवेदनशीलता और आत्म–निर्देशन कुछ अन्य वांछनीय गुण हैं जिन्हें आज के युवा अपनी रोजगार क्षमता बढ़ाने और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए विकसित कर सकते हैं।

आज के युवाओं में 21वीं सदी के इन कौशलों को विकसित करने के लिए शिक्षण प्रथाओं को पारंपरिक शिक्षक–केंद्रित दृष्टिकोण से अधिक छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण में बदलने की आवश्यकता है जो सक्रिय सीखने और सहयोग पर जोर देती है। विशेष रूप से, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के संस्थापक श्रद्धेय प्रोफेसर (डॉ.) लाल साहब द्वारा बनाई गई 1975 की डी.ई.आई. शिक्षा नीति, अध्ययन के अपने शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षा की प्रस्तावित योजना के हिस्से के रूप में इनमें से कई कौशल सेटों को शामिल करती है। सेवा और व्यायाम।

पूर्व छात्र बाइट्स...

" दयालबाग में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है..."

".....शैक्षिक उत्कृष्टता और चरित्र विकास का अमूल्य मिश्रण। संस्थान ने अपने विविध पाठ्यक्रम और अंतःविषय शिक्षा, सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक सेवा पर जोर देकर मुझे अंतर्मुखी से एक सर्वांगीण व्यक्तित्व में बदल दिया, जिससे मुझमें परिश्रम, दृढ़ता और अनुशासन जैसे मूल्य पैदा हुए। सबसे बढ़कर, इसने मुझे ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भाईचारे का सार सिखाया, मेरे भीतर करुणा और सहानुभूति की भावना को बढ़ावा दिया"।

– गुरु प्रिया डी. बैचः एम बी ए 2020, वर्तमान में, असिस्टेंट प्रोसेस लीड – एच.आर., एस.आर.एफ. लिमिटेड।

".....एक आशीर्वाद जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। दयालबाग़ में मेरी छह साल की कॉलेज शिक्षा ने मुझे एक व्यक्ति के रूप में पूरी तरह से बदल दिया। स्कूल में कक्षा में बातचीत के दौरान एक भी शब्द न बोलने वाला छात्र होने से लेकर सहायक प्रोफेसर बनने तक व्यक्तित्व में हुआ परिवर्तन जादुई रहा है।

आत्मविश्वास के अलावा, डी.ई.आई. ने मुझे कड़ी मेहनत करना सिखाया और आवश्यक काम किए बिना सफलता की कोई उम्मीद नहीं जगाई। डी.ई.आई. ने मुझे अनुभव कराया कि कड़ी मेहनत करना आनंददायक भी हो सकता है। सफलता की राह का आनंद लेते हुए ध्यान केंद्रित रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

इसलिए मुझे अदम्य साहस, पहले से बेहतर काम करने की इच्छा, आत्म–अनुशासन, विनम्रता, मन की शांति और खुशी मिली... सूची अंतहीन है..."

– तुहिना शर्मा, बैचः बी.ए. (ऑनर्स) अंग्रेजी (2001), एम.ए. अंग्रेजी (2003), बी.एड (2004), वर्तमान में, उद्यमी।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई

संरक्षक
प्रो. पी.के. कालरा

मुख्य संपादक
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक
डॉ. सोना दीक्षित
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी
डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्यों
डॉ. चारु स्वामी
डॉ. नेहा जैन
डॉ. सौम्या सिन्हा
श्री आर.आर. सिंह
प्रो. प्रवीण सक्सेना
प्रो. वी. स्वामी दास
डॉ. रोहित राजवंशी
डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक
डॉ. नमस्या

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक
प्रो. पी.के. कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री राकेश मेहता

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)

संपादक
प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति
डॉ. सरन कुमार सतसंगी,
प्रो. साहब दास
डॉ. बानी दयाल धीर
श्रीमती शिफाली सत्संगी
श्रीमती अरुणा शर्मा
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. गुरप्यारी भटनागर
डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002।

पंजीकृत कार्यालयः 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049।

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस